भगवान् श्री महावीर की २५वीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

जैन कहानी माला

७

देसल और देद
वीरम
गोशल
धनदत्त तथा धनश्री

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रवर्तक मुनि
श्री निरंजन विजयजी महाराज

श्री खान्ति स्मारक ग्रंथमाला प्रकाशन

भगवान् महावीर २५०० वाँ निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में मंगाइये—

श्री गौतम पृच्छा - सचित्र

(सरल हिन्दी भाषा में—६० चित्रों के साथ)

यह पुस्तक प्रत्येक जैन-अजैन को अवश्य पढ़ना चाहिए

इस पुस्तक में श्री गौतमस्वामी के ४८ प्रश्नों के उत्तर भगवान् महावीर ने दिये, उन्हें मनोहर कथाओं के साथ रोचक व सुन्दर शैली में दिये गये हैं। भाववाही और प्रासंगिक ६० चित्रों, पक्की जिल्द तथा करीब ४०० पृष्ठों में प्रकाशित हो रहा है। मूल्य : दस रुपये, डाक खर्च अलग।

—: प्राप्ति स्थान :—

श्री रसिकलाल अमृतलाल शाह

ठि० ज्योति हाई स्कूल के सामने

नगर सेठ का बंड़ा, घी काँटा रोड

अहमदाबाद-१

प० पू० प्रवर्तक साहित्य प्रेमी मुनिराज निरंजनविजयजी महाराज द्वारा लिखी

निम्न सचित्र पुस्तकें (गुजराती) अवश्य मंगाकर पढ़ें :—

१. **मयणा और श्रीपाल**—जैन धर्म का रहस्य जानना हो तो यह ग्रन्थ जरूर पढ़ें। इसमें प्रासंगिक १४३ सुंदर चित्र भी दिये गये हैं। डेमी साइज पृष्ठ ७०० बढ़िया कागज—मूल्य रु० २०)

२. **श्रीपाल कथा**—नो प्रकरण, ८४ मनोहर चित्र, पृष्ठ ३००, लेजर पेपर—मूल्य रु० १०)

३. **उत्तम दृष्टांत संग्रह-भाग-१**—२२ कथाएं, ५१ चित्र बोधक सुंदर शैली में, पृष्ठ ३००, पक्की बाईंडिग—मूल्य रु० ५)

४. **महाराज शुकराज**—शत्रुंजय नाम क्यों पड़ा यह इसमें बताया गया है। १५ रंगीन चित्र व अन्य २० चित्र, पक्की जिल्द, पृष्ठ १४०—मूल्य रु० ३-५०)

५. **नेमिनाथ और श्रीकृष्ण**—सुन्दर ३५ चित्रों के साथ, पृष्ठ २००—मूल्य रु० २)

६. **साध्वी सुनंदा**—सचित्र—अद्भुत रोचक कहानी—मूल्य ८१ पैसा

७. **मंगलकलश—बोधप्रद कथाएँ**—११ चित्रों सहित, मोटे टाइप में—मूल्य ७५ पैसा

८. **श्रेष्ठि गुणसार**—दान की महिमा की सुन्दर कथा, ११ सुन्दर चित्रों के साथ—मू० ७५ पैसा

९. **वरदत्त गुण मंजरी**—ज्ञान पंचमी की महिमा पर सुंदर वार्ता, मनोहर चित्रों के साथ—मू० ७५ पैसा

१०. **रोहिणीतप की महिमा**—११ मनोहर चित्रों के साथ मूल्य : ७५ पैसे

११. **पोष दशमी को महिमा**—मनोहर चित्रों के साथ मूल्य : १-३० पैसे

१२. **सेठ नागदत्त**—सचित्र मूल्य : ३५ पैसे
१३. **झांझरिया मुनिवर**—सचित्र मूल्य : ३५ पैसे

हिन्दी भाषा में—

१४. **विक्रम चरित्र**—सचित्र—भाग १, २ व ३, पृष्ठ १३००, २०० मनोहर चित्रों से युक्त मूल्य : रु० १५
१५. **दो प्रतिक्रमण सूत्र**—(सविधि) पौषध विधि, स्तवन, सज्झाय आदि मूल्य : रु० २
१६. **संस्कार पोथी**—नं० १-२ मूल्य : २५ पैसे
१७. **श्रावक कर्त्तव्य**—मूल्य : रु० १
१८. **प्रभु पूजन विधि**—मूल्य : ५० पैसे
१९. **जैन कहानी माला**—प्रत्येक पुष्प का मूल्य : ७५ पैसे

—: प्राप्ति स्थान :—

श्री रसिकलाल अमृतलाल शाह
ठि० ज्योति हाई स्कूल के सामने
नगर सेठ का बंड़ा, घी कांटा रोड
अहमदाबाद-१

प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेताओं से भी ये पुस्तकें मिल सकती हैं ।

श्री खान्ति स्मारक ग्रंथमाला - पुष्प–१०

वाली मण्डल श्री मनमोहन पार्श्वनाथाय नमो नमः

देसल और देद, वीरम, गोशल, धनदत्त तथा धनश्री

संयोजक :

शासन प्रभावक - निडरवक्ता - मरुधररत्न

प्रवर्तक मुनिराज श्री निरंजनविजयजी म० 'साहित्य प्रेमी'

संपादक :

चाँदमल सीपाणी

—: प्रकाशक :—

श्री पोसूलाल हुकमचन्दजी राजावत : श्री अरविन्दकुमार जीवराजजी राठोड़

४३।४, एम. पी. रोड महातार पाखड़ी, बम्बई १०

वास्ते

श्री नेमि - अमृत - खान्ति - निरंजन ग्रन्थमाला

प्रकाशक :

श्री घोसूलाल हुकमचन्द जी राजावत
अरविंद कुमार जीवराज जी राठोड़
४३।४, एम. पी. रोड
महातार पाखड़ी, बम्बई-१०

प्रथम आवृत्ति : १०००
सितम्बर, १९७५
मूल्य ००-७५ पैसे

प्राप्ति स्थान :
श्री रसिकलाल अमृतलाल शाह
ठि. ज्योति हाई स्कूल के सामने
नगर सेठ का बंड़ा, घी कांटा रोड,
अहमदाबाद

मुद्रक :
शिरीशचन्द्र शिवहरे
दी फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर

प्रकाशकीय निवेदन

श्री खान्ति स्मारक ग्रंथमाला का यह चौथा पुष्प आपके समक्ष प्रस्तुत करते प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। भविष्य में इस ग्रंथमाला द्वारा इसी प्रकार की बोधक पुस्तकें आपको मिलती रहेंगी यही शुभाषा है।

इस ग्रंथमाला के संस्थापक प. पूज्य प्रवर्तक साहित्य प्रेमी मुनिराज श्री निरंजन विजयजी महाराज साहब एवं मुनिराज उत्तम विजयजी म. का हम उपकार मानते हैं जिन्होंने जैन कहानी माला को प्रकाशित करने का सुअवसर प्रदान किया।

श्री चाँदमलजी सीपाणी अजमेर निवासी के हम आभारी हैं जिन्होंने "जैन कहानी माला" के संपादन, मुद्रण व संशोधन का भार समर्पण भाव से वहन कर हमें सहयोग दिया। वास्तव में श्री सीपाणीजी के परिश्रम, लगन व सेवा भाव के कारण ही हम यह "जैन कहानी माला" हिन्दी में प्रकाशित करने में सफल हो सके हैं।

—घीसूलाल राजावत

—अरविंद राठोड़

सम्पादकीय

जैन साहित्य को चार अनुयोगों में बांटा गया है, उनमें 'धर्मकथानुयोग' एक है। धर्म कथा के द्वारा उपदेश, शिक्षा एवं प्रतिबोध देने की परम्परा बहुत पुरानी है। आगमों में भी हजारों कथाओं का समावेश है। आगम के बाद भी महान् आचार्यों ने प्राचीन जैन इतिहास की कथाओं को संक्षिप्त रूप में लिखकर उनका अस्तित्त्व बनाये ही नहीं रखा वरन् लोक जीवन के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनाया।

महापुरुषों का त्याग और संयम हमारे लिए आदर्श का काम करता है। इसलिए हमें महापुरुषों के जीवन चरित्र अवश्य ही पढ़ना और सुनना चाहिये। महापुरुषों की जीवनियां ही मानव को महान् बना सकती हैं।

वस्तुत: जो व्यक्ति महापुरुषों की जीवनियां पढ़ने-सुनने में रुचि नहीं रखता वह अपने जीवन को अंधकार में रखता है। इसीलिए प्रसिद्ध दार्शनिक प्लूटार्क ने कहा भी है—"जो व्यक्ति महापुरुषों की जीवनियों से अपरिचित रहता है वह जीवन भर शैशवावस्था में ही रहता है।"

प. पू. मुनिराज जी निरंजनविजयजी महाराज एक उदीयमान साहित्यकार हैं। हिन्दी जगत् में बोधक, सरल सुन्दर शैली में कथा-कहानियों का अभाव सा है उस दिशा में यह प्रयत्न भगवान् महावीर २५०० वां निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में प्रशंसनीय है।

—चाँदमल सीपाणी

देसल व देद

ऋद्धि के निवास समान ऋद्धिवास नाम का एक नगर था। उस नगर में वर्धमान नाम का एक वणिक रहता था। उसके दो पुत्र थे। उनमें बड़ा देसल था जो बहुत दयालु था और दूसरे का नाम देद था जो बहुत निर्दयी था।

पिता ने दोनों पुत्रों का विवाह कर दिया। उसमें देसल के देविनी नाम की भार्या थी और देद के देमती नाम की भार्या थी। देसल धन उपार्जन करने के साथ साथ शक्ति अनुसार धर्म भी करता था और सुख से दिन बिताता था। इस प्रकार वह धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थ की साधना करता था। परन्तु देद तो धर्म को छोड़ अकेली लक्ष्मी कमाने में लगा रहता था। वह धर्म कार्य में एक पाई भी खर्च नहीं करता था और लक्ष्मी का सम्भोग में उपयोग करता था।

अनुक्रम से देसल के बहुत पुत्र हुए। वे पुत्र भी बड़े रूपवान, तेजस्वी एवं गुणवान थे। देविनी अपने पुत्रों का लालन पालन करती थी और अपनी गोदी में बिठा कर खिलाती थी। देमती के एक भी पुत्र नहीं हुआ। एक समय जेठानी को अपने बच्चों को गोदी में बिठा कर

खिलाते देख देमती अपने मन में विचार करने लगी, "अरे ! मेरी जेठानी के इतने बच्चे हैं और मेरे एक भी पुत्र नहीं है। मैंने पूर्व भव में क्या पाप किया कि जिससे मेरे एक भी संतान नहीं हुई।" इस प्रकार वह चिंतातुर होकर बैठी है इतने में देद बाहर से आया। उसे देख देमती ने कहा, अरे ! अपने नसीब में पुत्र सुख नहीं लिखा और कहा भी है कि जिस घर की धूल में खेलने वाले उठते, बैठते, रोते, आनन्द देने वाले दो तीन बालक नहीं हैं वह घर स्मशान के समान होता है। अतः हे स्वामी ! आप किसी भी तरह का उपाय करो कि जिससे अपने यहाँ पुत्र उत्पन्न हो।

पत्नी के वचन सुनकर देद ने उसे आश्वासन देकर कहा, "मैं पुत्र प्राप्ति के लिए क्या उपाय करूँ ? तब देमती ने कहा "आप सत्यवादी नाम के यक्ष की आराधना करें जिससे अपने मन की इच्छा सफल हो।

इस पर देद ने नगर बाहर रहे सत्यवादी यक्ष की आराधना की। प्रथम देद ने यक्ष की विधिपूर्वक पूजा की। फिर उपवास कर यक्ष के मंदिर में रहा और यक्ष से कहा, "हे यक्ष ! जब तुम मुझे पुत्र दोगे तब ही मैं यहाँ से जाऊंगा। इस प्रकार कह कर वह वहाँ मंदिर में बैठ गया।

इस प्रकार जब ग्यारह उपवास हुए तब यक्ष ने प्रकट होकर देद से कहा, "हे देद ! तू मेरे ऊपर कष्ट किस लिए डाल रहा है ? देव, दानव या व्यन्तर भी किये कर्मों को दूर करने में शक्तिमान नहीं है। तेरे अंतराय कर्म का उदय होने से तेरे भाग्य में पुत्र सुख नहीं है तो मैं तुझे पुत्र कहाँ से दूँ।"

यक्ष के वचन सुनकर दोनों हाथ जोड़ कर देद ने कहा, "हे यक्ष ! आप मुझे पुत्र का वरदान नहीं देंगे तो मैं आपके समक्ष अपने प्राण त्याग कर दूँगा। इस पर तंग आकर आखिर यक्ष ने कहा, "जा तेरे यहाँ पुत्र होगा, परन्तु जल्दी मृत्यु हो जायगी।

इस प्रकार कहकर एक क्षण में वह यक्ष अदृश्य हो गया।

यक्ष का वचन सुन देद को हर्ष एवं विषाद दोनों हुए। पुत्र होगा इस कारण हर्ष परन्तु जल्दी मर जायगा इस बात का दुःख था। इसके बाद देद ने घर आकर अपनी पत्नी से पुत्र होने का वृत्तांत कह कर पारणा किया। देमती को शोक होगा

ऐसा सोचकर वह पुत्र जल्दी मर जायगा यह यक्ष का वचन देद ने देमती से नहीं कहा।

वरदान मिलने के साथ ही देमती की कुक्षी में गर्भ रहा। नौ महीने पूरे होने पर उसने पुत्र को जन्म दिया। जन्म के दस दिन बीतने पर अपने कुटुम्बी जनों को भोजन करा देद ने उस पुत्र का नाम 'तोला' रखा।

पुष्प, फल आदि पूजा की सामग्री लेकर देद बालक के साथ यक्ष की पूजा के लिए यक्ष के मंदिर पर गया। परन्तु यक्ष ने मंदिर के दरवाजे बन्द कर दिये। देद ने दरवाजा खोलने की बहुत कोशीश की फिर भी दरवाजा नहीं खुला। इससे निराश हो वह वहाँ से अपने घर लौटा। इसके बाद वह बालक उसी रात्रि को मर गया। उसके शोक में देद व देमती मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़े। उस समय बड़े भाई देसल ने उन दोनों को आश्वासन देकर भोजन कराया। बाद में उनसे कहा, "हे भाई! यह जो मेरे पुत्र हैं वे तुम्हारे ही हैं ऐसा समझो। काल के समक्ष अपना किसी का बस नहीं चलता; अतः अब शोक करना व्यर्थ है" इस प्रकार समझा बुझा कर उसने उनका शोक दूर किया।

पुत्र की मृत्यु से जब देद व देमती विलाप कर रहे थे उस समय कोई विद्याचारण मुनि

आकाश मार्ग से जा रहे थे। उन्होंने उनका विलाप सुना। इस कारण वह मुनि वहाँ आये। सब ने उन्हें वन्दन किया। मुनि ने भी उन्हें धर्मलाभ दिया। इसके बाद मुनिराज ने उन्हें धर्मोपदेश दिया।

देशना समाप्ति पर मुनिराज ने देद से कहा, "हे देद! तू शोक का त्याग कर कारण कि शोक करने से मरा हुआ व्यक्ति वापिस नहीं आता और अब तू धर्म का आश्रय ले। धर्म के प्रताप से सब ठीक होगा। कहा है कि, धर्म करने वाला कुबेर के समान ऋद्धिवान होता है उसे विशाल बुद्धि और उज्ज्वल कीर्ति मिलती है, विनयवान व रूपवान पुत्र एवं पतिव्रता पत्नी मिलती है। संक्षेप में मतलब यह है कि धर्म से सभी मनोकामना पूरी होती है।

धर्मोपदेश के पश्चात वर्धमान सेठ ने पूछा, "हे भगवन् पूर्वभव में मेरे दो पुत्रों ने कैसे २ कर्म बाँधे हैं इसे बताने की कृपा करें। इस पर गुरु ने उन दोनों का पूर्वभव का वृतान्त सुनाया।

इसी नगर में विहूण और निहूण नाम के दो कुलपुत्र थे। उनमें बड़ा धर्मिष्ठ और दयालु था तथा दूसरा वन में जाकर हिरणियों के बच्चों को उनकी माता से अलग करता था।

हंसों व तोतों को पींजरें में बन्द करता था तथा गाँव २ में जाकर मनुष्यों के बच्चों को भी खरीदने तथा बेचने का धन्धा करता था ।

एक बार उस निहूण ने किसी गाँव से एक क्षत्रिय बालक का अपहरण किया । निहूण ने मेरे बच्चे का अपहरण किया है ऐसा जानकर उस क्षत्रिय ने निहूण को बहुत मारा । इससे वह निहूण मर कर नरक में गया ।

बड़े भाई विहूण को जब भाई के मरने की बात का पता लगा तो उसे इस संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो गया इससे अनशन कर मृत्यु को प्राप्त हुआ और सौधर्म देवलोक में देव हुआ । वहां से च्यव कर विहूण का जीव तुम्हारे यहां देसल नाम का बड़ा पुत्र हुआ । नरक में गये निहूण का जीव भी वहां नरक के दुःख भोग कर आयुष्य पूर्ण होने से मर कर तुम्हारा दूसरा पुत्र देद हुआ । उसने पूर्व भव में पशुओं के बच्चों का वियोग करवाया इस कारण इस भव में वह

अपुत्रिया हुआ। देसल के जीव ने भूखे प्यासों के प्रति दया भाव रखा इस कारण वह तुम्हारा पुत्र बहुत पुत्रों वाला हुआ।

इस प्रकार गुरु महाराज के वचन सुनकर देसल को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। उसने अपना पूर्वभव देखा और गुरु महाराज के पास सम्यक्त्व सहित श्रावक धर्म अंगीकार किया। बाद में दीक्षा लेकर तप करने लगा। विद्याचारण मुनि वापिस आकाश मार्ग से चले गये। देसल मुनि भी अनशन कर मरकर सौधर्म देवलोक में देव रूप में उत्पन्न हुए।

अतः ज्ञानी भगवन्तों ने फरमाया है कि सदा मैत्री एवं करुणा की भावना को रखते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए।

☆

वीरम

महेन्द्रपुर नाम का एक नगर था। उस नगर में गुणदेव नाम का सेठ रहता था। सेठ के गायत्री नाम की भार्या थी। उन्हें किसी बात की कमी न थी केवल एक पुत्र की कमी थी। बहुत समय बीतने पर उनके घर एक पुत्र का जन्म हुआ। परन्तु वह अपने कर्म के कारण जन्म से बहरा एवं अन्धा था। पिता ने उसका कोई नाम नहीं रखा। इससे कोई बहरा कहकर बुलाता था कोई अन्धा कह कर बुलाता। इस प्रकार वह दो नामों से प्रसिद्ध हुआ।

पिता ने उसे स्वस्थ करने के लिए यंत्र, मंत्र, तंत्रादि बहुत से उपचार किये परन्तु वे सब व्यर्थ गये। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसा उसे फल मिलता है। कर्म के समक्ष किसी का वश नहीं चलता। निकाचित कर्म जीव को भोगने ही पड़ते हैं। इस कारण माँ बाप विचारने लगे कि हमने ऐसा कौनसा पाप किया जिससे हमें ऐसा बहरा और अन्धा पुत्र प्राप्त हुआ। इस प्रकार दुःख और चिंता से सेठ का जीवन बीतने लगा। इतने में कोई ज्ञानी मुनि उस नगर में पधारे। उन्हें वन्दन करके गुणदेव सेठ परिवार के साथ वन में गये। गुरुदेव को वन्दन कर सेठ उनके पास बैठे। इसके बाद ज्ञानी गुरु महाराज ने सेठ को धर्मोपदेश देते हुए कहा, "हे गुणदेव सेठ! तुम तुम्हारे बहरे और

अन्धे पुत्र को देखकर हृदय में क्यों शोक करते हो ? जिस जीव ने जैसे कर्म किये होते हैं उसके वे कर्म दूर करने में इन्द्र भी समर्थ नहीं है। जिसने जैसे कर्म बाँधे हैं उसका फल उसे स्वयं को ही भोगना पड़ता है। उसमें कोई दूसरा साझीदार नहीं बन सकता।

गुरु महाराज का वचन सुनकर गुणदेव सेठ ने पूछा, "हे गुरुदेव ! किस कर्म के कारण यह मेरा पुत्र जन्म से अन्धा व बहरा है यह कृपा कर बताइये।

गुरुदेव ने कहा—"इस महेन्द्रपुर में वीरम नाम का एक कुटुम्बी रहता था। वह अधर्मी, झूंठ बोलने वाला एवं दूसरों की निंदा करने वाला था। वह बात बात में हर किसी पर कलंक लगा देता था।

महेन्द्रपुर के पास का एक राजा महेन्द्रपुर के राजा का दुश्मन था। इस कारण लोग उससे डरते थे। एक बार दो पुरुष एकान्त में गुप्त रूप से किसी सम्बन्ध में मंत्रणा कर रहे थे। वीरम ने उन्हें एकान्त में बात करते देखा

इससे वह किस सम्बन्ध में बातचीत कर रहे हैं यह जाने बिना कोतवाल के पास जाकर कहने लगा, कि ये दो व्यक्ति सीमान्तर राजा को बुला लाने की गुप्त मंत्रणा कर रहे हैं।

वीरम की बात सच्ची मानकर कोतवाल ने उन दोनों व्यक्तियों को बाँध राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा ने पूछा, "तुम किस सम्बन्ध में मंत्रणा कर रहे थे।"

दोनों व्यक्तियों ने कहा हम तो हमारे घर सम्बन्धी बातचीत कर रहे थे। दूसरे किसी सम्बन्ध में हमने बातचीत नहीं की।

उस समय दुष्ट आशय वाले वीरम ने कहा, "हे स्वामी! ये दोनों झूंठ बोल रहे हैं। मैंने इनकी सारी बात सुनी है। ये सीमान्त राजा को बुलाने की मंत्रणा कर रहे थे।"

इससे राजा ने वीरम की बात सत्य मानकर उन दोनों को दंड दिया।

एक बार एक सेठ परदेश गया था। वह विदेश से वापिस आ रहा था तो उसे रास्ते में वीरम मिला। सेठ ने वीरम से पूछा, मेरे घर शान्ति है न? यह सुन दूसरों को दुखी करने के स्वभाव वाला वीरम बोला, "हे सेठ तुम्हें घर की क्या बात कहूँ? बात कहने में सार नहीं है।"

यह सुन सेठ को बात सुनने की ज्यादा आतुरता होने से उसने फिर से पूछा, "हे वीरम!

जो बात हो वह जल्दी कह। वीरम ने कहा, "सेठ ! तुम्हारे घर कामदेव हररोज आता है और तुम्हारी स्त्री के साथ आनन्द विलास करता है।"

वीरम का यह वचन सुन उसकी बात सच्ची मान क्रोधित उस सेठ ने राजा के समक्ष यह वृतांत कहा। इस पर क्रोधित हो राजा ने कामदेव का सारा धन ले लिया। इससे वह कामदेव बेकसूर ही दुख में पड़ गया।

एक बार कोई क्षत्रिय वीरम से नाराज हो गया। इससे उसने उस पापी वीरम को मार डाला। हे सेठ ! वह वीरम मर कर तुम्हारे घर पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। पूर्व में किये पाप कर्मों के कारण वह जन्म से अन्धा व बहरा हुआ। अभी भी वह अनन्त समय तक दुखी होकर संसार में परिभ्रमण करेगा।

ज्ञानी गुरु द्वारा कहा वृत्तांत सुनकर गुणदेव सेठ तथा गायत्री धर्म ध्यान में संलग्न हुए। अब वह जन्मान्ध तथा बहरा उनका पुत्र बहुत दुःख भोग मर कर दुर्गति में गया। अतः कभी भी किसी व्यक्ति को दूसरों की निन्दा नहीं करना चाहिये और साथ ही किसी पर झूंठा कलंक नहीं लगाना चाहिए।

*

गोशल

प्रतिष्ठानपुर नाम का एक प्रसिद्ध नगर था । उस नगर में गोविन्द नाम का एक गृहस्थ रहता था । उसके गौरी नाम की भार्या थी । उनके गोशल नाम का एक पुत्र भी था । परन्तु वह व्यसनी एवं निर्दयी था । एक बार वह अकेला ही वन में जा पहुँचा और वहाँ उसने लकड़ी द्वारा एक मधुमक्खी का छत्ता तोड़ कर बहुत सी मक्खियों का नाश किया । उसने वन में दावानल लगाया जिससे वन में रहे हुए खरगोश आदि अनेक जीव मर गये ।

वह गोशल बैलों आदि को मारता था व कोमल वृक्षों को भी काटता था । इस प्रकार उस गोशल के निर्दयी कामों को देख लोग उस पर नाराज हो उसके पिता गोविन्द को उलाहना दिया कि तुम गोशल को क्यों कुछ नहीं कहते ? इससे पिता ने गोशल को बुलाकर समझाया । परन्तु गोशल ने पिता की बात को बिलकुल नहीं माना इस कारण वह लोगों के उद्वेग का कारण बना । समय बीतने पर उसके माता पिता का स्वर्गवास हो गया । इसके बाद वह गोशल निरंकुश हाथी

के समान बहुत उन्मत्त बन गया। एक बार उसने राजा के बाग में जाकर उसमें लगे नारंगी आदि वृक्षों को जड़ से उखाड़ने लगा। इससे कोतवाल ने उसे पकड़ कर राजा के समक्ष उपस्थित किया। राजा ने उसकी सारी सम्पत्ति जप्त कर उसे छोड़ दिया। परन्तु वह पुनः एक बार राज वाटिका में गया और सुकोमल वनस्पति का छेदन करने लगा। इस पर माली ने उसे बाँध कर मारा। इसके

बाद बनपालक ने राजा के समक्ष जाकर कहा, हे महाराज! गोशल ने आज आपकी वाटिका का नाश कर दिया है। यह सुन कर राजा ने गोशल के दोनों हाथ कटवा दिये। इस प्रकार दुखी होकर वह बहुत पश्चाताप करने लगा। कहा है कि "जो माता, पिता आदि की बात नहीं मानता वह कर्मवश जब दुखी होता है तब बहुत पश्चाताप करता है।"

अंत में बड़े कष्ट भोग कर गोशल मर कर उसी नगर में पद्म नाम का एक सेठ रहता था उसके वहां पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। सेठ ने उसका नाम "गोरा" रखा। जन्म से ही उसे गलते

कोढ़ का रोग था। पिता ने रोग मिटाने के बहुत प्रयत्न किये, परन्तु उससे रोग छूटने के बजाय बढ़ने लगा। इस प्रकार जन्म से दुखी ऐसा वह गोरा दिनों दिन बड़ा होने लगा।

एक बार उस नगर के उद्यान में पद्मसार नाम के एक ज्ञानी मुनि-भगवंत पधारे। नगर के लोग उन्हें वन्दन करने गये। उस समय सेठ भी अपने पुत्र को लेकर वन्दन करने गया।

उस समय मुनिराज ने धर्मोपदेश देते हुए फरमाया, "इस संसार में अनेक प्रकार के जीव दृष्टिगोचर होते हैं, उनमें कोई सुखी, कोई दुखी, कोई धनवान, कोई दरिद्री, कोई निरोगी तो कोई महारोगी दिखाई पड़ता है। इस विचित्रता का कारण उस जीव द्वारा किये गये कर्म ही होते हैं; अतः जीव अपने किये कर्मों के कारण ही सुखी अथवा दुखी होता है।

गुरू महाराज का उपदेश सुनकर सेठ ने दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव से कहा, "भगवन्! मेरे इस पुत्र ने ऐसा कौनसा पाप कर्म किया है जिससे वह जन्म से ही कुष्ट रोग से पीड़ित है।

पद्मसेठ को उत्तर देते हुए मुनिराज ने कहा, "हे सेठ! यह तुम्हारा पुत्र पूर्वभव में इसी नगर में गोविन्द नाम के सेठ का गोशल नाम का पुत्र था। उसने उस भव में वन में आग लगायी जिसमें अनेक जीवों का संहार हुआ, बिना कारण वृक्षों को काटा, मधु मक्खियों के छत्ते गिराये

और पशुओं को कष्ट पहुँचाया। इस प्रकार के अनेक पाप कृत्य उस गोशल ने किये। इस पर राजा ने उसके दोनों हाथ कटवा दिये जिससे दुखी हो मर कर यह तुम्हारा कोढ़िया पुत्र हुआ है।

गुरु महाराज द्वारा वृत्तान्त सुनकर पद्म सेठ ने पुत्र से कहा, "हे पुत्र! पूर्वभव में तूने जिस प्रकार के पापकर्म किये उसका फल तुझे इस भव में मिला है; अतः अब धर्म में रत बन।

अपना पूर्वभव सुनकर उस गोरा को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। इससे उसने मुनिराज द्वारा कही सारी बात जान ली। इस पर उसने मुनिराज के समक्ष अपने पापों की निन्दा की और साथ ही उसी समय अनशन ग्रहण किया। शुभ भाव में आयुष्य पूर्ण होने से मर कर पहले देवलोक में देवरूप में उत्पन्न हुआ। यह कथा सुन कर भव्य जीवों को जीव हिंसा का त्याग करना चाहिये।

★

धनदत्त तथा धनश्री

पृथ्वी के आभूषण के समान भूमिमंडन नाम का नगर था। उस नगर में शत्रुओं का दमन करने वाला शत्रुदमन नाम का राजा राज्य करता था। उसी नगर में धन नाम का एक सेठ रहता था। सेठ के धीरु नाम की पत्नी थी। उस सेठ के यहां बहुत से बैल, ऊँट, गधे और पाड़े थे। वह इन जीवों पर अधिक पैसा कमाने के लोभ से बहुत भार लाद कर किराये द्वारा आजीविका चलाता था।

एक बार कोई साधु महाराज उस धन सेठ के वहां आहार लेने के लिए आये उस समय शुभ भाव से मुनिराज को दान देकर उसने पुण्य उपार्जन किया। किराये द्वारा आजीविका चलाते अन्त में आयुष्य पूर्ण होने पर वह धन सेठ उसी नगर के धनावह नाम के सेठ के वहां धनदत्त नाम का पुत्र हुआ। परन्तु वह कुबड़ा था। धनदत्त दिन प्रतिदिन बड़ा होने लगा। युवावस्था में वह वाणिज्य कला में होशियार हुआ।

उसी नगर में दूसरा एक धन नामका सेठ रहता था। उपरोक्त धन सेठ की पत्नी धीरु मरकर धन सेठ की धनश्री नाम की पुत्री हुई। धनश्री अत्यंत रुपवती और गुणवान थी। जब

धनश्री युवावस्था में आयी तब पूर्व भव के सम्बन्ध के कारण उस कुबडे धनदत्त पर प्रेम जागा। इस कारण वह उसके साथ विवाह करने की इच्छा करने लगी। इस धन सेठ के दूसरी एक और पुत्री थी परन्तु वह पूर्वभव के कर्म के उदय से कुबडी थी।

एक बार उस धन सेठ के वहां एक निमित्तियां आया। धनश्री को देखकर निमित्त ज्ञान से उसने जाना कि, "जो इस धनश्री से विवाह करेगा वह नगर सेठ होगा। निमित्तयाँ ने यह बात उस धन सेठ से कही।

उसी नगर में धनपाल नाम का एक व्यापारी रहता था उसने यह हाल किसी तरह जान लिया इसलिए उसने धन सेठ से धनश्री की मंगनी की। धन सेठ ने भी धनपाल को धनश्री के लिए योग्य जानकर उसकी मंगनी स्वीकार कर ली। इसके बाद अपनी दूसरी पुत्री जो कुबडी थी उसे कुबडे धनदत्त को देने का निश्चय किया। इस प्रकार उन दोनों जोड़ों का सम्बन्ध सभी को योग्य लगा।

धनश्री तो पूर्व भव के स्नेह के कारण उस कुबडे धनदत्त से विवाह करना चाहती थी। परन्तु उसके पिता ने तो धनपाल के साथ उसका विवाह निश्चित किया। इस कारण धनश्री चिंतातुर होकर सोचने लगी कि उसे किस प्रकार धनदत्त मिले। अन्त में उसने यक्ष की आराधना

करने का निश्चय किया। धनश्री की आराधना से प्रसन्न होकर यक्ष ने प्रगट होकर कहा, "हे धनश्री तूने मेरी आराधना किसलिए की बता, मैं तेरी अवश्य इच्छा पूरी करुंगा।

धनश्री ने कहा, "मेरे पिता ने धनपाल के साथ मेरा विवाह निश्चित किया है, परन्तु मैं उससे विवाह करना नहीं चाहती, मेरी इच्छा तो धनदत्त से विवाह करने की है; अतः आप मेरी इच्छा पूरी करें।

यक्ष ने कहा, मैं लग्न के समय सभी लोगों की नजर बाँध लूंगा इससे धनदत्त के साथ तेरा विवाह हो जावेगा। इस सम्बन्ध में तू अब चिन्ता मत कर। इस प्रकार कह कर यक्ष अदृश्य हो गया। धनश्री अपना मनोरथ सिद्ध होने से बहुत प्रसन्न हुई।

धन सेठ ने दोनों पुत्रियों के विवाह के लिए एक ही शुभ लग्न लिया! लग्न के दिन यक्ष ने अपनी दिव्य शक्ति से धनश्री का धनदत्त के साथ और धनपाल का कुब्जा के साथ लग्न सम्बन्ध करवाया। दोनों व्यक्ति विवाह करके अपने अपने स्थान पर गये। धनदत्त कुबड़ा था वह अपने को मिली रूपवती धनश्री को देखकर बहुत खुश हुआ। धनश्री भी अपना इच्छित वर पाकर बहुत प्रसन्न हुई कारण की प्रेम रूप को नहीं देखता।

धनपाल जिसकी इच्छा धनश्री से विवाह कर नगर सेठ बनने की थी, वह अपनी कुब्जा स्त्री को देखकर मन में बहुत दुखी हुआ। परन्तु कुब्जा तो अपने को मिलने वाले कुबड़े के स्थान पर धनपाल जैसे सुन्दर पति को देखकर मन में प्रसन्न हुई। धनपाल ने धनदत्त से जाकर कहा, "तुमने जिस धनश्री से विवाह किया है वह तो मेरी पत्नी है; अतः वह मुझे सौंप दो। यदि मुझे मेरी पत्नी नहीं दोगे तो मैं राजा के समक्ष जाकर शिकायत करूँगा।

धनपाल का कथन सुन धनदत्त ने कहा, "वह तो मेरी पत्नी है तुम्हारी नहीं है, सभी की साक्षी में मैंने उससे विवाह किया है; अतः तुम इस सम्बन्ध में कुछ भी करोगे तो वह सब व्यर्थ ही जाएगा।"

इस प्रकार वाद विवाद करते वे दोनों राजा के पास पहुँचे उस समय राजा ने कहा, "मैं इस सम्बन्ध में योग्य जानकारी करूँगा; अतः अभी तो तुम दोनों अपने अपने स्थान पर जाओ। इससे वे दोनों अपने घर चले गये।

राजा ने फिर धनश्री को पास बुलाकर पूछा, हे धनश्री ! "तू सच्ची बात बता कि यह फेरफार किसने किया। तेरा विवाह तो धनपाल के साथ निश्चित हुआ था; अतः तू सही बात मुझे बतला दे।"

राजा के पूछने पर धनश्री ने सही बात बताते हुए कहा, "हे राजन् सुनिये ! मेरी इच्छा शुरू से ही धनदत्त के साथ विवाह करने की थी। परन्तु जब मेरे पिता ने धनपाल के साथ विवाह निश्चित किया तब अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मैंने यक्ष की आराधना की। मेरे पर संतुष्ट होकर यक्ष ने ही यह काम पूरा किया है।" धनश्री से यह हाल सुन कर राजा ने विचार किया कि, जिसे देव ने किया उसे अन्यथा करने में कौन समर्थ है ? इस प्रकार मन में निश्चित कर राजा ने दोनों फरयादी और उनके सम्बन्धियों को बुलाकर कहा, "यह जो बनाव बना है उसे यक्ष देव ने ही किया है। अतः किसी को किसी के प्रति द्वेष नहीं रखना चाहिये। देव को जो उचित लगा वह सही है। इस सम्बन्ध में झगड़ना व्यर्थ है"

राजा का यह प्रत्युत्तर सुनकर वे दोनों व्यक्ति संतुष्ट हो अपने अपने घर लौट गये।

उस अवसर पर धर्मरुचि नाम के चार ज्ञान के धारक मुनिराज वहाँ पधारे। उस समय सब लोग

अपने अपने परिवार के साथ उन्हें वन्दन करने गये। ज्ञानी गुरु भगवंत ने सभा के समक्ष धर्मदेशना दी। धर्मदेशना पूरी होने पर धनदत्त ने गुरु महाराज से पूछा, "हे भगवन् किस कर्म के उदय से मैं कुबड़ा हुआ। कुबड़ा होने पर भी किस कर्म से धनश्री मुझ पर इतना अधिक राग करती है और हमें इतनी लक्ष्मी, भोग विलास के सुख साधन प्राप्त हुए हैं? यह कृपा कर मुझे बतलाइये। ज्ञानी मुनिराज नें कहा, "सुनो, पूर्व भव में तुम दोनों धन और धीरु नाम के पति पत्नि थे। उस भव में तुमने बैल, ऊँट, गधों पर उनकी शक्ति के उपरान्त भार लादकर उन्हें बहुत दुःख दिया था। इस कारण से तू इस भव में कूबड़ा हुआ। परन्तु उसी भव में तुमने शुभ भाव पूर्वक मुनिराज को दान दिया था और उस सुपात्र दान के प्रभाव से इस भव में तुम्हें लक्ष्मी एवं भोग सामग्री प्राप्त हुई है। पूर्व भव के स्नेह भाव के कारण इस भव में भी तुम दोनों में इतना स्नेह भाव है।

ज्ञानी गुरु के मुख से अपनी पूर्व भव की हकीकत सुन कर धनदत्त को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ। इसके बाद उसने गुरु भगवन्त के समकित मूल श्रावक धर्म स्वीकार कर वह अपने घर लौटा।

स्वयं ने पूर्व भव में सुपात्र दान दिया था जिससे मुझे धनश्री जैसी पत्नी, अपार लक्ष्मी, भोग-सुख सामग्री आदि प्राप्त हुए हैं ऐसा जानकर वह सुपात्र दान में अधिक उद्यमी बना। श्रावक धर्म का पालन कर आयुष्य पूर्ण होने पर धनदत्त देव लोक में देवरूप में उत्पन्न हुआ।

इस कथा को सुन कर अथवा पढ़ कर सार यह लेना है कि मूक प्राणियों पर न अधिक बोझ लादना और लदवाना चाहिए। इसी प्रकार सुपात्र दान जैसे दान देने में अधिक अपने धन का सदुपयोग करना चाहिये।